गुरुपूर्णिमा विशेष

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ जुलाई २०२६
वर्ष : ३६ अंक : १ (निरंतर अंक : ४०३)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

पूज्य बापूजी के सद्गुरु भगवत्पाद
साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज

मनुष्य की शाश्वत सुख की माँग की पहचान और पूर्ति करानेवाला महोत्सव है - गुरुपूर्णिमा । मरणधर्मा शरीर में अमरता का दीदार करा देती है, नश्वर में शाश्वत का अनुभव करा देती है

गुरुपूर्णिमा । - पूज्य बापूजी

२९ जुलाई

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

ऋषि प्रसाद ३६ वीं जयंती : २९ जुलाई वर्ष २०२६

...तब तक हे परमात्मा के अमृतपुत्र ! तू रुकना मत - पूज्य बापूजी

हे मानव ! तेरे अंदर ईश्वर का अथाह बल छुपा है। तेरे अंदर सृष्टिकर्ता स्वयं विराजमान है। तू जितना उसके करीब जायेगा उतना ही वह अपना अनुभव व्यक्त करता जायेगा और तेरी भ्रांति मिटती जायेगी। सद्गुरु के साथ मानसिक संबंध जोड़ता जायेगा तो गुरु-तत्त्व की, गुरुदेव की वह मधुर और उत्साहजनक वाणी सुनाई पड़ेगी कि हे वत्स ! तू शरीर से मेरे नजदीक कभी न भी हो लेकिन याद रख, जिस दिन से मंत्रदीक्षा दी तभी से मैं तेरे साथ हो गया हूँ। हे वत्स ! तू ऐसा कार्य न करना कि मैं तेरे हृदय में बैठकर तेरे को फटकारूँ लेकिन तू ऐसे कार्य करना जिससे मैं तेरे हृदय में बैठा हुआ प्रसन्न होऊँ और तुझे धन्यवाद देता हुआ मैं अपने गले लगाता चलूँ।

हे साधक ! तुझे कुछ समझ में न आये तो प्रभात को अपने अंतर में गोता मारना। कभी-कभी तू अंदर निहारना। बाह्य जगत के आकर्षण तुझे खींचते हों तो तू गुरुमंत्र का अवलम्बन लेकर गुरुओं के, ब्रह्मवेत्ताओं के, जीवन्मुक्त महापुरुषों के वचनों का विचार करके उस धूल को झाड़ देना। भूतकाल में क्या हो गया है, कितनी गलतियाँ हो गयीं इसको बार-बार याद करके अपने को हताश और निराश मत करना वत्स ! जो हो गया है उसको भूलते जाना और तू अपने लक्ष्य की ओर चलना। मुझ तक पहुँचने की यात्रा में, मेरे स्वरूप से एक होने के लिए मेरे साधक ! मेरे वत्स ! कहीं तुझे विचित्र अनुभव होंगे, कहीं साधना की गाड़ी में कभी पंक्चर हो गया ऐसा दिखेगा लेकिन तू अपनी विचार की दिशा बदल के फिर आगे चलते रहना। जब तक मुझ चैतन्यस्वरूप अनुभव में तू एक नहीं हुआ तब तक हे मित्र ! हे वत्स ! हे प्रिय ! परमात्मा के अमृतपुत्र ! तू रुकना मत।

संसार तेरा घर नहीं, दो चार दिन रहना यहाँ। कर याद अपने राज्य की, स्वराज्य निष्कंटक जहाँ ।।

बाह्य अनुकूलता, बाह्य प्रतिकूलता धोखा है। इन्द्रियों का जगत बाह्य खिलवाड़ है, धोखामात्र है। तू इन्द्रियातीत जगत में पहुँचना, गुणातीत जगत में पहुँचना और कभी थक जाय, हताश-निराश हो जाय तो फिर अपनी आत्मशक्ति जगाना : 'मैं अपने उच्च आदर्शों के लिए सब कुछ करने को तैयार हूँ। ॐ... ॐ... ॐ... मैं अब माताओं के गर्भों में नहीं लटकूँगा। ॐ... ॐ... ॐ... मैं अब मानवयोनि, देवयोनि या पाशवी योनियों में नहीं भटकूँगा। मैं अब अपने चैतन्यस्वरूप में, परमात्मस्वरूप में विश्रांति पाऊँगा। ॐ... ॐ... ॐ...'

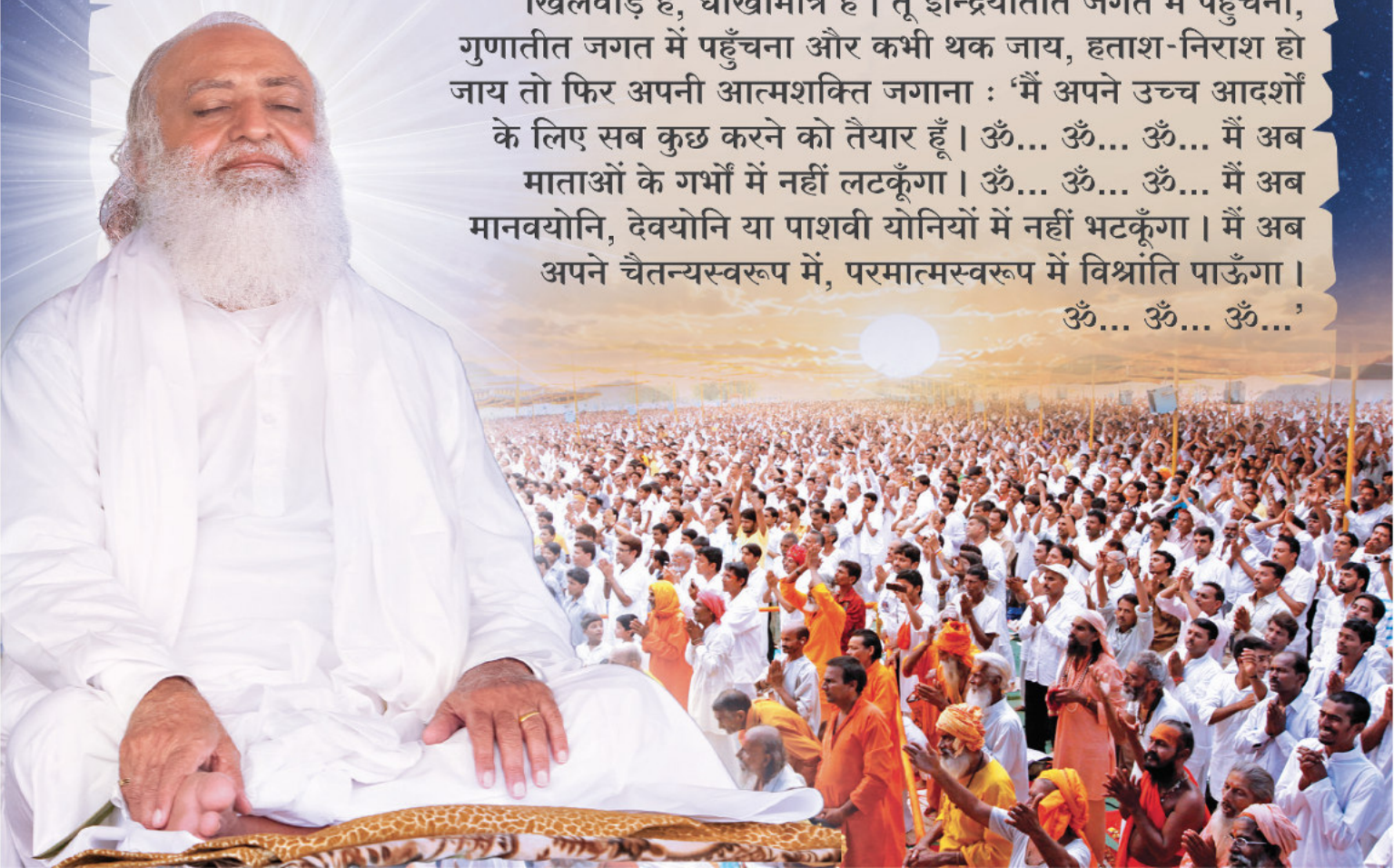

शाश्वत सुख की माँग पूरी करानेवाला महोत्सव : गुरुपूर्णिमा

२९ जुलाई को गुरुपूर्णिमा महापर्व है । इसकी महिमा के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है :

मनुष्य की शाश्वत सुख की जो माँग है उसकी पहचान और पूर्ति करानेवाला महोत्सव है - गुरुपूर्णिमा । यह आषाढ़ी पूर्णिमा को मनाया जाता है तथा इसका बहुत भारी महत्त्व है । गुरुपूर्णिमा मरणधर्मा शरीर में अमरता का दीदार करा देती है, नश्वर में शाश्वत का अनुभव करा देती है ।

२९ जुलाई : गुरुपूर्णिमा महापर्व पर विशेष

यह उत्सव सब उत्सवों का सिरताज है । अन्य उत्सव तो लौकिक होते हैं, दैविक होते हैं परंतु यह तो आध्यात्मिकता से भरा हुआ, लौकिकता को सजाता हुआ और दैविक रहस्य बताता हुआ उत्सव है । यह उत्सव व्रत भी है और पर्व भी । यह सर्वोत्तम सुख - आत्मसुख के द्वार खोलने का पर्व है । भारतीय संस्कृति के प्रमुख ४० पर्वों में यह पर्व इस महान संस्कृति का प्रसाद बाँटनेवाला महास्तम्भ है ।

जो भगवान को पाने का, विकारों पर विजय पाने का, ८४ लाख योनियों में जन्म-मरण के चक्कर को तोड़ के मुक्तात्मा होने का रस देते हैं, ज्ञान देते हैं ऐसे गुरु का आदर जितना करो उतना कम है ।

कोई लाख-लाख तीर्थों में स्नान करे उसका पुण्य तो होता है परंतु दो क्षण गुरु का दर्शन और सत्संग लाख-लाख तीर्थों से भी ज्यादा फलदायी होता है । गुरु का दर्शन और पूजन अनंत फल को देनेवाला है । दूसरे पुण्यों के फल सुख देकर नष्ट हो जाते हैं परंतु गुरु का दर्शन और पूजन अनंत फल देता है, अंत नहीं होता उस फल का । इसीलिए संत कबीरजी ने कहा :

तीरथ नहाये एक फल, संत मिले फल चार ।
सद्गुरु मिले अनंत फल, कहत कबीर विचार ।।

गुरुपूजन का दिन व पर्व

साधक के लिए गुरुपूर्णिमा एक व्रत और तपस्या का दिन है । इस दिन साधक को चाहिए कि उपवास रख के गुरु के द्वार जाकर गुरुदर्शन, गुरुसेवा का लाभ ले और गुरु-सत्संग का श्रवण करे । इस दिन गुरुदेव की पूजा करने से वर्षभर की पूर्णिमाओं को किये हुए सत्कर्मों के पुण्य का फल मिलता है ।

गुरुपूनम सर्वोपरि है कारण कि मुक्तिदात्री है, कल्याणदात्री है । और समय गुरु के द्वार न भी पहुँचें पर गुरुपूनम को गुरु के द्वार अवश्य पहुँचें । नहीं पहुँच सकते तो मानसिक रूप से गुरु से सम्पर्क करें तो विशेष उन्नति होती है ।

व्यासपूर्णिमा की आप सबको खूब-खूब बधाई हो । भगवान करें कि सबकी भगवान में प्रीति हो, सब परस्पर मिल-जुलकर रहें और **'परस्परदेवो भव'**, **'तुझमें राम मुझमें राम सबमें राम समाया है'** की सद्भावना विकसित हो । **आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ।** 'दूसरों के प्रति ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए जो हम अपने प्रति नहीं चाहते ।' यह व्यासजी का संदेश घर-घर में पहुँचे, देश-विदेश में पहुँचे, जन-जन तक पहुँचे और मानव संयमी, सदाचारी व दिव्य आत्मा बने ।

अहमदाबाद आश्रम बचाने के पक्ष में अखाड़ों के संतों-महंतों ने बुलंद की आवाज

बाबा बलरामदास हठयोगीजी, राष्ट्रीय महामंत्री, अ. भा. वैष्णव अखाड़ा परिषद : मैं भारत सरकार से कहूँगा कि संत आशारामजी बापू के अहमदाबाद आश्रम में आध्यात्मिक गतिविधियाँ एवं गुरुकुल चल रहे हैं, और भी अच्छे कार्य हो रहे हैं । इन सबको देखते हुए इस आश्रम की भूमि को छोड़ के अगर वे कहीं और खेलों का आयोजन करते हैं तो बहुत अच्छा होगा । राष्ट्र तो तभी बचेगा जब अध्यात्म-प्रेम होगा, अध्यात्म नहीं होगा तो राष्ट्र कहाँ बचेगा ? इस विषय में भारत सरकार गम्भीरता से सोचे ।

श्रीमहंत रविन्द्रपुरीजी, सचिव, श्री पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी : आशारामजी बापू का जो मूल आश्रम है अहमदाबाद का, जहाँ से करोड़ों लोगों की श्रद्धा व भावनाएँ जुड़ी हुई हैं, जो देवस्थान है, जहाँ इतने सालों से लोग साधन-भजन कर रहे हैं, आज उसको तोड़ने की बात चल रही है ! खेल का मैदान बनाने के लिए सरकार के पास बहुत भूमि है । अगर लोगों की भावनाएँ टूट गयीं तो उस खेल का हम क्या करेंगे ? वह खेल एक महीने का कार्यक्रम है, विदेशी आयेंगे और चले जायेंगे । यह करोड़ों लोगों की श्रद्धा व आस्था का विषय है । मठ-मंदिर और आश्रमों को तोड़कर इस प्रकार की आधुनिक संरचनाएँ बनायी जायेंगी तो भारत की संस्कृति कहाँ जायेगी ? भारत का साधु-समाज इस बात से चिंतित है । हरिद्वार संघ के हम सब लोग आग्रह करते हैं कि आश्रम को बचाया जाय । सरकार इस पर पुनः विचार करे ।

महामंडलेश्वर डॉ. सुमनानंद गिरिजी, निरंजनी अखाड़ा, प्रमुख, मौन तीर्थ पीठ : धर्मांतरण को रोकने का जितना काम संत श्री आशारामजी ने किया है, उतना भारत के किसी भी साधु-संत ने नहीं किया है इसलिए उनका विरोध हुआ और ये सारी दिक्कतें खड़ी हुईं । हम सभीकी माँग है कि अब सरकार भी यदि वास्तव में हिन्दुत्ववादी है तो कम-से-कम संतों पर इस तरह का अत्याचार न हो । उनके अहमदाबाद आश्रम को तोड़-फोड़ के वहाँ खेल का मैदान बनाना उचित नहीं है ।

महामंडलेश्वर हंसा भारतीजी, निरंजनी अखाड़ा : खेल-मैदान बनाने के लिए मोटेरा आश्रम को तोड़ने का प्रयास हो रहा है । हमारी सरकार होने के बावजूद यदि हमारे आस्था-स्थलों को तोड़ा जाता है तो फिर सरकार का भी रहना मुश्किल हो जायेगा क्योंकि इस पर पूरा साधु-संतों का ही आशीर्वाद है । खेलों के लिए और जगह भी व्यवस्था हो सकती है ।

महामंडलेश्वर स्वामी श्री आशुतोषानंद गिरिजी, निरंजनी अखाड़ा : ऐसे महान पूज्य संत श्री आशारामजी बापू, जिनका रोम-रोम समाज-सेवा के लिए समर्पित है, उन महापुरुष के लिए जो षड्यंत्र हुआ है मैं उसकी घोर निंदा करता हूँ ।

वर्तमान सरकार ने अब तक इस षड्यंत्र का पर्दाफाश क्यों नहीं किया यह विचारणीय है। बापूजी ने १३ साल जेल में बिता दिये । ऐसे

ये दो सूत्र जीवन में ले आओ - पूज्य बापूजी

इन दो बातों को अपने जीवन में उतार लिया जाय तो गुरुपूर्णिमा का उत्सव सौ प्रतिशत सफल हो जायेगा – **करने में सावधान रहें और होने में संतुष्ट रहें ।**

जो कुछ घटना घट जाय उसमें फरियाद मत उठने दो । पिछले जन्म या इस जन्म का कोई-न-कोई कृत्य है, चलो पसार हो रहा है । जब होने में संतुष्ट रहोगे तो 'होना' तुम्हें बाँधेगा नहीं और करने में सावधान रहोगे तो 'करना' तुम्हें जन्मों में भटकायेगा नहीं । तुम मुक्तस्वरूप अपने-आपमें जग जाओगे । फिर तुम्हारा दर्शन करके लोग अपना भाग्य बना लें तो तुम्हें कोई हर्ज नहीं, तुम ब्रह्मवेत्ता हो जाओगे । तुम्हारा दर्शन करके देवता धन्य होने लगेंगे ।

कोई भी संकल्प करो तो सावधानी बरतना कि 'यह मिल जाय फिर क्या ?' प्रश्नचिह्न रख देना । 'ऐसा बन जाऊँ फिर क्या ?' 'मैं तो टमाटर छाप बन जाऊँ...' तुम चाहे खरबूजा छाप हो जाओ भैया ! परंतु आखिर राख हो जाओगे और वास्तव में यह तुम हो ही नहीं । सावधान ! तुम जो हो वह बनते नहीं, बिगड़ते नहीं, बदलते नहीं । इसलिए कुछ करके तुम बनोगे, करके सुखी होओगे ऐसा मत सोचना ।

सुख या मान लेने के लिए मत करो, सुख या मान देने के लिए करो । अच्छा कहलाने के लिए मत करो बल्कि जो तुम्हारा अच्छा स्वभाव है उसको जगाने के लिए करो । लोग वाहवाही के लिए सत्कर्म करते हैं, जब वाहवाही कम होने लगती है अथवा वाहवाही में विघ्न आने लगते हैं तो सत्कर्म छोड़ देते हैं तो करने में वे असावधान हैं ।

गुरुपूनम की गुरुदक्षिणा विशेष तो यही है । गुरु को संतुष्ट करना हो तो गुरु की आज्ञा माननी चाहिए । और गुरु हमें जहाँ देखकर प्रसन्न होना चाहते हैं वहाँ हमें जरूर पहुँचना चाहिए । तो गुरु तुमको देह में, विकार में, अहंकार में, क्रोध में, लालच और कपट में फँसा हुआ देखकर संतुष्ट होंगे क्या ? नहीं । गुरु तुम्हें अपने सिंहासन पर बैठा हुआ देखकर संतुष्ट होंगे, खुश हो जायेंगे ।

गुरुपूर्णिमा को लोग मेवा-मिठाई, दक्षिणा आदि कुछ-न-कुछ कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए रखेंगे । उनको कहता हूँ कि दक्षिणा के निमित्त कुछ नियम ले लें कि 'अगली गुरुपूर्णिमा तक मैं योगवासिष्ठ महारामायण का पारायण करूँगा या प्रतिदिन इतना गुरुगीता का पाठ करूँगा अथवा इतना मंत्रजप करूँगा, श्वासोच्छ्वास की इतनी गिनती करूँगा, इतनी देर ॐकार, स्वस्तिक या गुरुमूर्ति को एकटक देखते हुए ॐकार का गुंजन करूँगा या इतना यह साधन करूँगा...' वह चिट्ठी में लिखकर रख के अथवा मन में संकल्प करके प्रणाम करें तो उन लोगों को ज्यादा लाभ होगा ।

रोज सुबह उठेंगे तो थोड़ी देर शांत बैठेंगे और इस सूत्र को आत्मसात् करने का संकल्प करेंगे – करने में सावधान, होने में संतुष्ट । इतना वचन तो आप गुरुदक्षिणा में दे सकते हैं और मुझे लेने का हक है और मुझे जरूरत भी है ।

फिर तुम तो तर जाओगे, तुम्हारे जो पूर्वज हैं न, वे भी निहाल हो जायेंगे ।

होने में जब तुम संतुष्ट होने का अभ्यास करोगे तो हो सकता है कि पहली बार संतुष्ट न भी रह सको पर तुमको यह सूत्र याद रहेगा तो कोशिश तो करोगे । इस कोशिश में हजार बार

विद्यार्थी संस्कार

आध्यात्मिकता की जागृति का सामर्थ्य पुस्तकों में नहीं, सद्गुरु में है

स्वामी विवेकानंदजी की एकाग्रता ऐसी थी कि वे एक बार किसी भी पुस्तक को पढ़ लेते थे तो उन्हें सब याद हो जाता था । ऐसी स्मृतिशक्ति के धनी विवेकानंदजी ने आध्यात्मिक उन्नति के लिए पुस्तकों के अध्ययन के बजाय सद्गुरु के महत्त्व को सर्वोपरि जाना । वे कहते हैं : ''हम जीवनपर्यंत पुस्तकों का अध्ययन भले ही करते रहें और कितने ही बुद्धिमान क्यों न हो जायें परंतु अंत में हम यही देखते हैं कि आध्यात्मिक दृष्टि से हमारी किंचिन्मात्र भी उन्नति नहीं हुई । और यह बात गलत है कि बुद्धि की कुशाग्रता होने से आध्यात्मिक जागृति अवश्य होगी । पुस्तकों के अध्ययन से हमें कभी-कभी यह भ्रम हो जाता है कि इनसे हमें आध्यात्मिक मार्ग में सहायता मिल रही है । किंतु यदि हम इस बात की मीमांसा करें कि पुस्तकों के पढ़ने से हमें स्वयं को क्या लाभ होता है ? तो प्रतीत होगा कि इस अध्ययन से यदि अधिक-से-अधिक लाभ हुआ है तो केवल हमारी बुद्धि को ही, न कि हमारी अंतरात्मा को । बहुधा हम सब लोग आध्यात्मिक विषयों पर खूब बातचीत कर सकते हैं परंतु जब इस बात का अवसर आता है कि हम वास्तविक आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करें तो हम अपने को सर्वथा अयोग्य पाते हैं; इसका कारण यही है कि हमारी पुस्तकें, जिन्हें हम पढ़ते रहते हैं, हममें आध्यात्मिकता जागृत करने में समर्थ नहीं हैं । इस प्रकार की शक्ति जागृत करने के लिए किसी दूसरी आत्मा से ही शक्ति का संचार होना चाहिए ।

जिन पुरुष की आत्मा से ऐसा संचार होता है वे 'गुरु' कहलाते हैं और जिस व्यक्ति की आत्मा में संचार होता है वह 'शिष्य' कहलाता है । पहले तो यह आवश्यक है कि जिस आत्मा से इस प्रकार का संचार हो उसमें स्वयं इस संचार की शक्ति मौजूद हो और दूसरी बात यह है कि जिस आत्मा में यह शक्ति संचारित की जाय वह इसे ग्रहण करने योग्य हो । बीज का सतेज होना आवश्यक है तथा भूमि भी अच्छी तैयार होनी चाहिए और जब ये दोनों बातें विद्यमान होंगी तो प्रकृत धर्म का अपूर्व विकास अवश्य होगा ।

यह प्रकृति का आश्चर्यजनक नियम भी है कि भूमि के तैयार हो जाने पर बीज को अवश्य आना ही चाहिए और वह आ भी जाता है । इसी प्रकार आत्मा को जब धर्मोपलब्धि की प्रबल इच्छा (जीवात्मा को आत्मज्ञान की प्रबल जिज्ञासा) होती है तो धर्मशक्ति-संचारक पुरुष (सद्गुरु, ब्रह्मवेत्ता गुरु) का वहाँ प्रकट होना आवश्यक होता है और उस आत्मा (जीवात्मा) के सहायतार्थ वे अवश्य प्रकट भी हो जाते हैं ।'' ❑

एक अनाथ अंध बालक कैसे बना भक्तमाल का रचयिता ?

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

एक बालक जन्मजात सूरदास (अंधा) था। ५ साल का हुआ तो अकाल पड़ा और पिता भी मर गये। माँ बेचारी गाँव छोड़कर दर-दर की ठोकरें खाने लगी। अंधे बालक को साथ में ले चलना, कंधे पर उठाना माँ के वश का न रहा। वह उस बालक को वन में ले गयी, प्रार्थना की : 'हे वनदेवी ! हे जगत के देवता ! तू सर्वव्यापक सर्वेश्वर, परमेश्वर है ऐसा सुना है। मैं इस बालक को सँभाल नहीं सकती हूँ। अब मैं इसको तेरे हवाले छोड़ रही हूँ।'

जंगल में बालक को छोड़कर माई आगे निकल गयी। ५ साल का अनाथ, अंधा बालक जंगल में पड़ा है। अग्रदास महाराज और उनके गुरुभाई उसी जगह से गुजर रहे थे। देखा कि बालक पड़ा है। नजदीक आये तो पता चला कि वह सूरदास है। बोले : ''बेटे ! तुम कौन हो ? तुम्हारे माई-बाप कौन हैं ? इधर कैसे पड़े हो ?''

बालक बोला : ''अभी तक तो मैं अनाथ था, मैं सूरदास जन्मा, ५ साल की उम्र में पिता मर गये, माँ बहुत कष्टों-दुःखों में पड़ी और मेरे को पालने में असमर्थ हो गयी तो मुझे भगवान के हवाले छोड़ गयी लेकिन अब मुझे पता पड़ रहा है कि मैं अनाथ नहीं हूँ। महाराज ! मैं आपको देख नहीं सकता हूँ परंतु सबको देखनेवाले जगत के नाथ ने आपको प्रेरित किया, आप मेरी तरफ चलकर आये हैं। मैं आपको सही पता बताता हूँ कि मैं भगवान का हूँ। माँ के गर्भ से बाहर आते ही जिसने माँ के शरीर में दूध बनाया मैं उसका हूँ, वह मेरा है। उसी परम रक्षक का मैं दास हूँ।''

अग्रदास महाराज और उनके गुरुभाई का हृदय पसीजा, हृदयेश्वर उनके अंतःकरण में छलके। कमंडल से जल लिया और बालक की आँखों में पानी की बूँदें जायें इस ढंग से छिड़का, जरा-सा हाथ घुमाया। बालक बोला : ''महाराज ! मुझे दिखने लग गया।''

अग्रदास महाराज ने बालक की आँखों में पानी की बूँदें जायें इस ढंग से जल छिड़का, जरा-सा हाथ घुमाया तो...

अग्रदासजी उसे अपने आश्रम में ले आये। बालक कथाएँ सुनता, गुरुजी की सेवा करता। उस बालक का नाम नारायणदास रखकर गुरुदीक्षा दी। गुरुदीक्षा से ब्रह्महत्या जैसे महापातक मिट जाते हैं। उस बालक की सुषुप्त शक्तियाँ जागृत होने लगीं क्योंकि उसको गुरुमंत्र मिल गया था।

गुरुमंत्रो मुखे यस्य तस्य सिद्ध्यन्ति नान्यथा।...

नारायणदास १० साल का हुआ। संतों का दर्शन, गुरुदीक्षा का प्रभाव, मंत्रजप, प्राणायाम से सुषुप्त शक्तियाँ जागृत हुईं।

एक बार अग्रदासजी मानस पूजा में मग्न थे। नारायणदास गुरुजी को पंखा झलने की सेवा कर रहा था। उस समय अग्रदासजी का एक व्यापारी भक्त जहाज में माल भर के समुद्र पार कर रहा था। बीच समुद्र में आँधी-तूफान, बवंडर चलने लगा और ऐसी स्थिति हुई कि उसका जहाज अब डूबा, अब जान गयी। वह व्यापारी भक्त आँखें बंद करके गुरुजी से प्रार्थना करता है : 'गुरुजी ! रक्षमाम् ! पाहिमाम् !...'

आशारामजी बापू के केस का निर्णय कानूनी कसौटी पर खरा नहीं उतरता

– कीर्ति आहूजा, अधिवक्ता, उच्चतम अदालत

आपने कोई भी निर्णय पढ़ा होगा तो उसमें लिखा जाता है कि तमाम साक्ष्यों और गवाहों को मद्देनजर रखते हुए किसीको दोषी सिद्ध किया जा रहा है या किसीको निर्दोष बरी किया जा रहा है । लेकिन हम एक ऐसे निर्णय के बारे में चर्चा करेंगे जिसमें ऐसा नहीं दिख रहा है । वह निर्णय है जोधपुर हाई कोर्ट का – आशारामजी बापू की अपील का । इसके अनुच्छेद ३२ में कोर्ट ने कहा है कि 'उस कुटिया के कमरे में, जिसमें यह बताया गया कि लड़की द्वारा आरोपित घटना हुई, उसमें दो ही लोग मौजूद थे – एक लड़की और दूसरे आशाराम बापू, इनके अलावा कोई तीसरा नहीं था । इसलिए लड़की के बयान पर हम शंका नहीं कर सकते ।'

जबकि कानून क्या कहता है ? सुप्रीम कोर्ट ने कई सारे निर्णयों में कहा है कि यदि सोल टेस्टिमनी (घटना के एकमात्र चश्मदीद गवाह की गवाही) अविश्वसनीय, विरोधाभास-सहित और असम्भावित है तो उसे दोषसिद्धि का आधार नहीं माना जा सकता ।

अब इस निर्णय में मैं जब ढूँढ़ रही हूँ कि क्या यह परीक्षण ठीक से किया गया है तो मुझे वह ठीक से नहीं दिखा है । एक तरफ तो हाई कोर्ट ने इसमें लिखा है कि फेथ (faith/विश्वास) जो होता है वह कैसे किसी इंसान के दिमाग को बंद कर देता है । दूसरी तरफ कोर्ट ने खुद इस निर्णय में लड़की पर पूरा फेथ कर दिया उसके बयानों में बड़ी भारी त्रुटियाँ, विरोधाभास होते हुए भी !

इसी आधार पर अगर दोषी सिद्ध करना है तो फिर तो ट्रायल की जरूरत ही नहीं, हाई कोर्ट में अपील की भी जरूरत नहीं, सुप्रीम कोर्ट की भी जरूरत नहीं । फिर तो कोई भी बयान दे दे और उसके बाद सीधा दोषी सिद्ध कर दिया जाय ।

आशाराम बापू की तरफ से लिखित दलीलों में बेगुनाही सिद्ध करनेवालीं बहुत सारी चीजें रखी गयी थीं कोर्ट के सामने लेकिन निर्णय में वे नहीं दिख रही हैं जबकि कोर्ट का दायित्व था कि वह उनको संज्ञान में लेते हुए निर्णय ले । उन दलीलों से यह सिद्ध हो रहा है कि न तो लड़की कुटिया में गयी है और न ही तथाकथित घटना घटी है पर इसका संज्ञान ही नहीं लिया गया । फरवरी २०१३ से पहले बलात्कार की धारा तब लगती थी जब असल में बलात्कार हुआ हो यानी मेडिकल प्रमाण हो । उसके बाद बलात्कार के कानून में ऐसा संशोधन हुआ जिससे बिना मेडिकल प्रमाण के भी पुरुष पर बलात्कार की धारा लगायी जा सकती है । इसका फायदा उठाया गया बापूजी पर बलात्कार की झूठी धारा लगाने के लिए । पर ट्रायल शुरू होने से पहले लड़की ने तथाकथित घटना से संबंधित जो कहानी पुलिस के द्वारा पेश की वह

बहुगुणकारी सर्वसुलभ सोंठ

सोंठ अदरक का सुखाया हुआ रूप है । यह स्निग्ध, उष्ण, रुचिकर तथा शुक्रधातुवर्धक है । सोंठ उत्तम पाचक, कफ-वातशामक एक ऐसा सुगंधित द्रव्य है जो उष्ण होते हुए भी मधुर होने के कारण पित्त को नहीं बढ़ाता । यह उष्ण एवं वातनाशक होने से सभी प्रकार की पीड़ाओं में लाभदायक है । खाँसी, दमा, बवासीर, सूजन, हृदयरोग आदि में भी यह गुणकारी है । यह आमवात (गठिया) की उत्तम औषधि है । यह अतिरिक्त रक्त-शर्करा (blood sugar) तथा वजन कम करने में भी सहायक है ।

दूध में सोंठ चूर्ण मिलाकर लेने से वह सुपाच्य हो जाता है । कफ प्रकृतिवालों के लिए तथा शीत ऋतुओं में सोंठयुक्त दूध का सेवन निरापद है । हेमंत ऋतु में हरड़ के साथ सोंठ का सेवन रसायन का कार्य करता है । सोंठ, काली मिर्च व पीपर समभाग लेकर बनाया गया त्रिकटु चूर्ण आयुर्वेद की प्रभावशाली, सुप्रसिद्ध औषधि है ।

कुछ गुणकारी प्रयोग :

अतिसार में शीघ्र गुणकारी

आयुर्वेद के 'बालबोधोदय' ग्रंथ के अनुसार **'तद्वन्न शुण्ठ्या ह्यतिसाररोगे ।'** – अतिसार (दस्त) में सोंठ जैसी कोई दूसरी औषधि नहीं है । बार-बार होनेवाले दस्त में आधा चम्मच सोंठ-चूर्ण व आधा चम्मच बेलफल-चूर्ण छाछ के साथ या गर्म पानी के साथ दिन में २ बार लेने से शीघ्र राहत मिलती है । भोजन में घी डाल के पतली खिचड़ी लें ।

आमदोष की उत्तम औषधि

शरीर में आमदोष (कच्चा आहार रस) संचित होने के कारण मांसपेशियों में हलका-हलका दर्द अथवा जोड़ों में सूजन व दर्द बना रहता है । इसमें अल्प, पथ्यकर आहार के साथ सोंठ सिद्ध जल विशेष लाभदायक है ।

आमवात (गठिया) की श्रेष्ठ औषधि

आमवात में सोंठ निर्विवाद श्रेष्ठ औषधि है । २ कप पानी में १ चम्मच (२ ग्राम) गिलोय चूर्ण व आधा चम्मच (१ ग्राम) सोंठ चूर्ण मिला के उबाल लें । पानी १ कप रहने पर उसमें १ से ३ चम्मच अरंडी का तेल मिला के सुबह सूर्योदय के बाद खाली पेट लें । अथवा आधा से १ चम्मच सोंठ में आधा से १ चम्मच अरंडी का तेल मिला के तवे पर सेंककर सुबह सूर्योदय के बाद सेवन करें, ऊपर से सोंठ-सिद्ध जल पियें । इससे जोड़ों का दर्द व सूजन निश्चितरूप से कम होते हैं ।

उपरोक्त दोनों प्रयोगों में शीघ्र लाभ हेतु पथ्यकर आहार का सेवन करें । यथासम्भव उपवास करें, खट्टे व वायुवर्धक पदार्थ, फल, गुड़, दूध-दही व दूध से बने पदार्थ पूर्णरूप से बंद रखें ।

अन्य औषधीय प्रयोग :

(१) सिरदर्द : कफजन्य सिरदर्द में सोंठ के टुकड़े को पानी के साथ घिसकर अथवा सोंठ-चूर्ण को पानी में गर्म करके माथे पर लेप करें ।

(२) सामान्य बुखार : सम्पूर्ण लंघन (उपवास) करके सोंठ-सिद्ध जल पियें ।

सोंठ-सिद्ध जल

२ लीटर पानी में १ चम्मच (३ ग्राम) दरदरी कुटी हुई सोंठ मिला के पानी डेढ़ लीटर शेष रहने तक उबालें । गुनगुना पानी यथावश्यक थोड़ा-थोड़ा पियें ।

सावधानी : सोंठ का अधिक मात्रा में सेवन

जिसकी गवाही को बनाया आधार, वह खुद ही मुजरिम निकला !

१८ अप्रैल २०२६ । पानीपत पुलिस ने महेन्द्र चावला, उसके भाई देवेन्द्र चावला और भतीजे राम को लाखों रुपयों की योजनाबद्ध और संगठित वसूली, धोखाधड़ी, धमकियाँ देना, झूठी गवाही, अदालत को गुमराह करना – इन गम्भीर गुनाहों के तहत गिरफ्तार किया। एफ.आई.आर. के अनुसार महेन्द्र चावला के कुछ सरपंचों के साथ मुकदमे चल रहे थे। उसने उनके हक में गवाही देने के लिए उनसे ७० लाख रुपये ऐंठ लिये। एक बार हक में गवाही दी परंतु फिर उसने अपना असली चेहरा दिखाया । कभी फर्जी मेडिकल प्रमाण-पत्र दाखिल करके पेशी में नहीं जाता तो कभी अपनी जमीन से जुड़े मामलों को सुलझाने का दबाव बनाकर झूठी गवाही देने की धमकियाँ देता। आखिर उसने ८० लाख रुपये की अतिरिक्त माँग की लेकिन पैसे नहीं मिलने पर पिछली गवाही से पलट गया और सबके खिलाफ झूठी गवाही दे दी।

यही महेन्द्र चावला था जिसने एक समय मीडिया में आकर संत श्री आशारामजी बापू, श्री नारायण साँईं और आश्रम के खिलाफ आग उगली थी और उसके हर आरोप पर खबरिया चैनलों ने बड़ी बेबाकी से सच की मोहर लगायी थी। आज जब वह सलाखों के पीछे है तो उन चैनलों पर सन्नाटा क्यों छा गया ? इसलिए कि जब तथाकथित गवाह खुद ही ब्लैकमेलर निकले तो वे प्रसार-माध्यम भला क्यों ही कुछ बोलेंगे जिन्होंने उसकी कहानी को आधार बनाकर एक संत के खिलाफ वर्षों से झूठा दृष्टिकोण (नैरेटिव) गढ़ा।

पूज्य बापूजी, श्री नारायण साँईं और आश्रम के खिलाफ गवाहियाँ देने के पीछे भी महेन्द्र चावला का बड़ा आर्थिक लालच था, जिसकी पुष्टि सबसे पहले उसके भाई ने की थी। महेन्द्र के भाई ने बताया था कि वह ऐसा इसलिए कर रहा है कि उसे १०-१५ लाख मिलें। भोलानंद नामक व्यक्ति ने भी जाहिर में स्वीकार किया था कि ''महेन्द्र चावला ने मुझसे कहा था कि 'देखो, अभी हम ऐसा गेम खेलने जा रहे हैं कि हम सभी मालामाल होंगे और बापू कितना भी जोर लगा लें पर जेल से बाहर कभी नहीं आ पायेंगे ।' मीडियावाले रोज गाड़ी लेकर मेरे को लेने आते। मैंने जिंदगी में इतने नोट नहीं देखे होंगे जितने मीडियावाले मुझे दिखाते थे !''

राजू लम्बू ने भी उसके स्टिंग ऑपरेशन में सूत्रधार से कहा था कि ''हमने महेन्द्र चावला को करोड़ों का आदमी बना दिया है, पब्लिसिटी दिलवा के तुम्हें भी हम करोड़ों में खिलवा देंगे।''

आखिर क्यों अभियोजन पक्ष द्वारा ऐसे आपराधिक व्यक्ति को पूज्य बापूजी और श्री नारायण साँईं के मामलों में गवाह बनाकर खड़ा किया गया ? क्यों आरोपकर्त्रियों की तथाकथित कहानी को सच का जामा पहनाने के लिए ऐसे गवाहों का सहारा लिया गया ? ये सवाल हर जागरूक व्यक्ति के मन में सुलग रहे हैं।

पैसों के दम पर झूठे गवाह खड़े करना – यह वह हथियार है जिसका इस्तेमाल विदेशी ताकतों

आम की गिरी (मींगी) का मुखवास

पाचक व भूखवर्धक

पोषक तत्त्वों से भरपूर यह मुखवास स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक विटामिन B12 की कमी को दूर करता है । छाती में जलन, उलटी, जी मिचलाना, कृमि आदि समस्याओं में भी लाभदायी है ।

NOURISH विटामिन B12 टेबलेट

Prebiotic

✲ जीवनीय तत्त्वों, अमीनो एसिड्स, खनिजों से भरपूर ✲ विटामिन B12 की कमी से उत्पन्न होनेवालीं अनेकों गम्भीर समस्याओं से सुरक्षा देनेवाली ✲ पाचनशक्तिवर्धक ✲ प्रौढ़ावस्था व वार्धक्य में विशेष हितकारी

गुटखा, तम्बाकू आदि का व्यसन छुड़ाने के लिए यह मुखवास या टेबलेट लेना हितकर है । (टेबलेट चूसकर लें ।)

पूरे परिवार के उत्तम स्वास्थ्य के लिए

आँवला कैंडी

सेहत और स्वाद का संगम

पुष्कर आश्रम गौशाला से जुड़ी जंगल की शुद्ध भूमि, जो गोधूलि, गौ-खाद, अन्य शुद्ध खाद, अत्यंत शुद्ध जल से सम्पन्न है, उसमें उपजे ताजे आँवलों से तैयार की गयी यह कैंडी स्वास्थ्य एवं साधना में सहायक है । यह स्वादिष्ट, शक्तिप्रद एवं विटामिन 'सी' से भरपूर है । बच्चों को बाजारू टॉफियों से बचाने हेतु यह स्वास्थ्यवर्धक उत्तम विकल्प है ।

दीर्घायु व यौवन प्रदाता, विविध रोगों में लाभदायी

आँवला रस

यह वीर्यवर्धक, त्रिदोषशामक व गर्मीशामक है । इसके सेवन से आँखों व पेशाब की जलन, अम्लपित्त (hyperacidity), श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, बवासीर आदि पित्तजन्य अनेक विकारों में लाभ होता है ।

हिंगादि हरड़ चूर्ण

वायुनाशक श्रेष्ठ रसायन

यह अम्लपित्त (hyperacidity), कब्जियत, अफरा (gas), सिरदर्द, अपच, अरुचि, मंदाग्नि व पेट के अन्य छोटे-मोटे असंख्य रोगों के अलावा खाँसी, संधिवात (arthritis), हृदयरोग, सर्दी, कफ तथा स्त्रियों के मासिक धर्म की पीड़ा में लाभप्रद है ।

स्वच्छ और मजबूत दाँतों व स्वस्थ मसूड़ों के लिए असरकारक औषधियाँ

इन औषधियों से पायें अनेक लाभ

✲ दाँतों और मसूड़ों के दर्द को दूर कर उन्हें बनायें मजबूत ।
✲ दाँतों का हिलना, उनमें कीड़े लगना, छिद्र होना, मैल जमना, सड़न होना, खून निकलना आदि में लाभदायी ।
✲ मसूड़ों में सूजन, पीप निकलना, मुँह से दुर्गंध आना, मुँह के छाले तथा जिह्वा, तालू और होंठों के सभी रोगों में लाभदायी ।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा सामग्रीप्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ७३५९१९३७५२. ई-मेल : contact@ashramestore.com

सत्र २०२५-२६ की बोर्ड-परीक्षाओं के उत्कृष्ट परिणाम

अहमदाबाद, छिंदवाड़ा, भोपाल, आगरा, राजकोट व धुलिया गुरुकुल के १०वीं बोर्ड के तथा अहमदाबाद, सूरत, जयपुर व छिंदवाड़ा के १२वीं बोर्ड के परीक्षा-परिणाम १००% रहे।

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2024-26
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2026)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/24-26
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st July 2026

१०वीं व १२वीं राज्य बोर्ड परीक्षा-परिणाम

१०वीं सी.बी.एस.ई. बोर्ड परीक्षा-परिणाम

१२वीं सी.बी.एस.ई. बोर्ड परीक्षा-परिणाम

गुजरात बोर्ड परीक्षा-परिणाम

(PR = Percentile Rank)

१०वीं

१२वीं

आधुनिक शिक्षा व आध्यात्मिक ज्ञान का सुंदर सुमेल संत श्री आशारामजी गुरुकुल

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : ऋषि प्रसाद ऋषि दर्शन लोक कल्याण सेतु

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : रूपनारायण भगवानसिंह लोधी **मुद्रक** : विवेक सिंह चौहान **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चर्स, कुंजा मतरालियों, पाँटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी